राजलदेसर
26—01—2011

आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में अणुव्रत समिति राजलदेसर व महिला मण्डल के तत्वावधान में एवं नीरा बैद फाउन्डेशन ट्रस्ट, जयपुर के आर्थिक सौजन्य से महावीर विकलांग सहायता समिति, जयपुर द्वारा विकलांगो के कृत्रिम पैर, कैलीपर, वैशाखी आदि का वितरण किये गए।

अणुव्रत समिति के मंत्री चम्पालाल पाण्डे ने बताया कि 25 जनवरी को महाप्रज्ञ सेवा प्रकल्प की ओर से कृत्रिम पैर, कैलीपर्स व वैशाखी लगाने का शिविर सम्पन्न हुआ जिसमें कुल बत्तीस शिविरार्थियों की जाँच कर 27 व्यक्तियों को कृत्रिम पैर, कैलीपर्स व वैशाखी उपलब्ध करवायी गयी।

राजलदेसर
26—01—2011

''बच्चों में देश—भक्ति का भावना का जज्बा कायम रहना चाहिए। शिक्षा में निज हित की बजाए पर—हित और राष्ट्र—हित की भावना के विकास की सीख होनी चाहिए। आज के सन्दर्भ में नैतिक शिक्षा की विशेष आवश्यकता है''। उक्त उद्‌गार राष्ट्रसंत आचार्य श्री महाश्रमण ने राजल पब्लिक स्कूल में बासठवें गणतंत्र दिवस पर आयोजित ध्वजारोहण समारोह में विद्याार्थियों के बीच व्यक्त किए। आचार्य श्री महाश्रमण ने राजल पब्लिक स्कूल पर महत्ती कृपा कर बासठवे गणतंत्र दिवस पर आयोजित ध्वजारोहण समारोह में अपना परम सान्ध्यि प्रदान किया।

उन्होंने कहा— ''शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास है। आज की शिक्षा पद्धति में बौद्धिक विकास, शारीरिक विकास, मानसिक विकास और भावनात्मक विकास होना चाहिए। सही शिक्षक ही सही बालक का निर्माण कर सकते हैं। बच्चों का जीवन शुद्ध रहें। वे किसी भी प्रकार के नशें से दूर रहें, बुरे आचरण से बचें।

राजलदेसर, 25 जनवरी।

''आज मुझे सात्विक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। सरदारशहर चार्तुमास के बाद मेरी भावना थी कि मुझे अपने संघ से मिलना है और यह मिलन आज राजलदेसर की धरा पर हो रहा है। मेरा उद्देश्य 147वें मर्यादा महोत्सव को मर्यादित एवं सुव्यवस्थित रूप से पूरा करना है।। आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रसाद स्वरुप दिये गए 147वें मर्यादा महोत्सव को पूरा करने मैं राजलदेसर आया हूँ''। उक्त उद्‌गार राष्ट्रसंत आचार्य श्री महाश्रमण ने अतीत की स्मृति, वर्तमान का बोध और भविष्य की योजना पर प्रकाश डालते हुए नागरिक अभिनन्दन समारोह में प्रकट किए।

आचार्य महाश्रमण ने साधु–साध्वियों के विहार एवं धर्म प्रभावना विषय पर बोलते हुए कहा – ''गुरुओं के प्रसाद से एवं भाग्य के योग से हमें चरैवेति–चरैवेति रहना चाहिए। धर्म का प्रसार करते रहें, जन कल्याण हेतु विहार करते रहें।''

आगम के सूत्र एवं अर्हत्‌वाणी पर चर्चा करते हुए आचार्य प्रवर ने कहा – ''साधु–साध्वियों को आगम के पठन–पाठन कार्यों में समय–नियोजन करना चाहिए। विधिवत् श्रुत सामायिक का अभ्यास करते रहना चाहिए। उससे हमें पोषण मिलता है। वैराग्य की भावना को बढाने का मौका मिलता है। जन–सम्पर्क की भांति आगम सम्पर्क भी चलते रहना चाहिए।''

तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने अध्यात्म समवसरण में कहा कि हिंसा और आसक्ति नर्क का द्वार है। इनसे बचते रहने का प्रयास करते रहना चाहिए।

राष्ट्रसंत आचार्य श्री महाश्रमण का अध्यात्म समवसरण में नगर के सभी वर्गों द्वारा संघीय व नागरिक अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन समारोह में कस्बे के चालीस से अधिक धार्मिक, सामाजिक, व्यापारिक एवं विद्यार्थी संगठनों ने सामूहिक अभिनन्दन किया। समारोह का शुभारम्भ कन्या मण्डल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागताध्यक्ष मांगीलाल बैद ने आचार्य श्री महाश्रमण व साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा तथा समागत धवल वाहिनी का अपने सारगर्भित शब्दों में स्वागत किया। नागरिक अभिनन्दन पत्र का वाचन नगरपालिका अध्यक्षा के पति मोहनलाल मेघवाल ने किया एवं अध्यक्षा ने इसे आचार्य प्रवर को भेंट किया। इस अवसर पर कन्या मण्डल ने 11 संकल्पों का कलात्मक गुलदस्ता आचार्य प्रवर के श्रीचरणों में भेंट किया। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद नरेन्द्र बुढानियाँ ने कहा ''हमें संतों का पावन सान्निध्य मिला है यह हमारे लिए बड़े हर्ष और गौरव की बात है। हमें इसका पूरा लाभ उठाना चाहिए''।

कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, नाहर परिवार की सरिता बैद, अमृत सांसद दिलीप दूगड़, कांग्रेस प्रवक्ता अभिनेष महर्षि एवं साध्वी आरोग्यश्री आदि ने भाव भरा स्वागत किया। तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मण्डल ने अभिवन्दना करते हुए स्वागत गीत प्रस्तुत किया। वृद्ध साध्वी सेवा केन्द्र एवं बाहर से पधारी साध्वियों ने आचार्य महाश्रमण की अभिवन्दना की एवं अपनी भेंट सौंपी। इस अवसर पर भागीरथ पारीक ने राजलदेसर डायरेक्ट्री का आचार्य प्रवर के कर–कमलों से विमोचन करवाया।

मंत्री मुनि की पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति में आचार्य महाश्रमण ने उनकी विरल विशेषताओं का उल्लेख करते हुए श्रद्धा–सुमन अर्पित किए गए। समारोह का समापन आचार्य प्रवर के मंगलपाठ से हुआ। कार्यक्रम का संचालन प्रकाश चिण्डालिया ने किया।

मुनिश्री रविन्द्र कुमारजी को शासनश्री अलंकरण

आचार्य श्री महाश्रमण ने राजलदेसर में प्रथम दिवस आयोजित नागरिक अभिनन्द समारोह के दौरान मुनिश्री रविन्द्र कुमारजी को शासनश्री अलंकरण से अलंकृत किया और फरमाया कि रवीन्द्र मुनि की शासनसेवा, कषाय–मन्दता, वैराग्य–भावना आदि प्रबल है और ये आगम स्वाध्याय में सदैव जागरूकता से संलग्न रहते है जो कि प्रेरणास्पद है। उपस्थित श्रावक–श्राविका समुदाय ने 'ओम् अर्हम' की ध्वनि के साथ बधाई दी।

राजलदेसर
24–01–2011

फिजां में गूँजते वन्दे गुरुवरम् के जयघोष के साथ उमड़ा श्रद्धा का सैलाब। मौका था तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता बनने के बाद पहली बार आचार्य श्री महाश्रमण का राजाणा की पावन धरा पर मंगल–प्रवेश।

तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने आज अपनी विशाल धवल वाहिनी को साथ लेकर 1:30 बजे युवा भारती स्टेडियम से विशाल मर्यादा–यात्रा के साथ राजलदेसर मंगल–प्रवेश किया।

मर्यादा यात्रा जैन ध्वज के साथ नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए नाहर भवन पहुँची जहाँ पन्डित देवकीनन्दन के विधिवत् स्वस्तिवाचन एवं शंख–नगारा की ध्वनि के साथ आचार्य महाश्रमण का नाहर भवन का मंगल–प्रवेश हुआ।

सवा किलोमीटर लम्बी मर्यादा–यात्रा में हजारों नर–नारियों एवं विभिन्न विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के सिर पर लगी धवल टोपी मुख्य आकर्षण का केन्द्र बनी रही। विशाल मर्यादा–यात्रा में 21 विद्यालयों के पाँच हजार से अधिक बच्चें और इतने ही श्रद्धालु पंक्तिबद्ध गीत गाते, 'वन्दे गुरुवरम्' के जयघोष लगाते हुए चल रहे थे। मर्यादा–यात्रा के बीच रास्ते में आए नव–निर्मित तेरापंथ भवन में आचार्य श्री महाश्रमण ने 'पगलिया' किया। यात्रा में हजारों जैन–अजैन श्रद्धालुओं के अलावा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ कन्या मण्डल, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ किशोर मण्डल ज्ञानशाला के बच्चें अपने पूर्ण गणवेश में प्रफुल्लित थे। कस्बे की सैंकड़ों सामाजिक, व्यापारिक संस्थाएं भी हर्षोल्लास के साथ उपस्थित थी। आचार्य प्रवर के स्वागत में एक सौ एक तोरण द्वार बनवाए गए।

राजलदेसर
24–01–2011

मर्यादा यात्रा के बाद पण्डाल में उपस्थित विभिन्न विद्यालयों के बच्चों के समक्ष अपने उद्बोधन में आचार्य महाश्रमण ने कहा – ''बच्चें चरित्रवान्, ज्ञानवान् बनने के साथ विनय एवं विवेक का अमृतपान करें यहीं जीवन विज्ञान है''। उन्होंने कहा कि जीवन का प्रथम चरण जिसे ब्रह्मचर्य आश्रम कहा गया है उसमें विद्या का अध्ययन होना चाहिए। लौकिक एवं अध्यात्म विद्या का समावेश होना चाहिए, इससे ज्ञान का प्रकाश विकसित होता है। इस अवसर पर आचार्य प्रवर ने बच्चों को व्यसनमुक्त रहने का संदेश देते हुए नशा नहीं करने का संकल्प दिलाया। मुनिश्री किशनलाल ने जीवन–विज्ञान के बारे में जानकारी दी।